रविवार 2 मई, 2021

***विषय* — हमेशा की सजा**

***स्वर्ण पाठ:* यशायाह 43 : 1**

"हेइस्राएल तेरा रचने वाला और हे याकूब तेरा सृजनहार यहोवा अब यों कहता है, मत डर, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है; मैं ने तुझे नाम ले कर बुलाया है, तू मेरा ही है।"

उत्तरदायी अध्ययन: लूका 7 : 37-39, 44-48

37 और देखो, उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई।
38 और उसके पांवों के पास, पीछे खड़ी होकर, रोती हुई, उसके पांवों को आंसुओं से भिगाने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी और उसके पांव बारबार चूमकर उन पर इत्र मला।
39 यह देखकर, वह फरीसी जिस ने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचने लगा, यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान लेता, कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है? क्योंकि वह तो पापिनी है।
44 और उस स्त्री की ओर फिरकर उस ने शमौन से कहा; क्या तू इस स्त्री को देखता है मैं तेरे घर में आया परन्तु तू ने मेरे पांव धाने के लिये पानी न दिया, पर इस ने मेरे पांव आंसुओं से भिगाए, और अपने बालों से पोंछा!
45 तू ने मुझे चूमा न दिया, पर जब से मैं आया हूं तब से इस ने मेरे पांवों का चूमना न छोड़ा।
46 तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला; पर इस ने मेरे पांवों पर इत्र मला है।
47 इसलिये मैं तुझ से कहता हूं; कि इस के पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इस ने बहुत प्रेम किया; पर जिस का थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।
48 और उस ने स्त्री से कहा, तेरे पाप क्षमा हुए।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यिर्मयाह 31 : 3

3 यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है।

2. योएल 2 : 12, 13, 25, 27

12 तौभी यहोवा की यह वाणी है, अभी भी सुनो, उपवास के साथ रोते-पीटते अपने पूरे मन से फिरकर मेरे पास आओ।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

13 अपने वस्त्र नहीं, अपने मन ही को फाड़ कर अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो; क्योंकि वह अनुग्रहकारी, दयालु, विलम्ब से क्रोध करने वाला, करूणानिधान और दु:ख देकर पछतानेहारा है।

25 और जिन वर्षों की उपज अर्बे नाम टिड्डियों, और येलेक, और हासील ने, और गाजाम नाम टिड्डियों ने, अर्थात मेरे बड़े दल ने जिस को मैं ने तुम्हारे बीच भेजा, खा ली थी, मैं उसकी हानि तुम को भर दूंगा॥

27 तब तुम जानोगे कि मैं इस्राएल के बीच में हूं, और मैं, यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूं और कोई दूसरा नहीं है। और मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टूटेगी॥

3. यशायाह 43 : 25

25 मैं वही हूं जो अपने नाम के निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूं और तेरे पापों को स्मरण न करूंगा।

4. लूका 4: 14 (यीशु) (से :)

14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा।

5. लूका 5 : 1, 4-6, 7 (और भरा), 8, 10 (और जीसस), 27, 29-32

1 जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी, और परमेश्वर का वचन सुनती थी, और वह गन्नेसरत की झील के किनारे पर खड़ा था, तो ऐसा हुआ।

4 जब वे बातें कर चुका, तो शमौन से कहा, गहिरे में ले चल, और मछियां पकड़ने के लिये अपने जाल डालो।

5 शमौन ने उसको उत्तर दिया, कि हे स्वामी, हम ने सारी रात मिहनत की और कुछ न पकड़ा; तौभी तेरे कहने से जाल डालूंगा।

6 जब उन्होंने ऐसा किया, तो बहुत मछियां घेर लाए, और उन के जाल फटने लगे।

7 ... और दोनों जहाजों को भर दिया, ताकि वे डूबने लगे।

8 यह देखकर शमौन पतरस यीशु के पांवों पर गिरा, और कहा; हे प्रभु, मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं।

10 और वैसे ही जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को भी, जो शमौन के सहभागी थे, अचम्भा हुआ: तब यीशु ने शमौन से कहा, मत डर: अब से तू मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेगा।

27 और इसके बाद वह बाहर गया, और लेवी नाम एक चुंगी लेने वाले को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा, मेरे पीछे हो ले।

29 और लेवी ने अपने घर में उसके लिये बड़ी जेवनार की; और चुंगी लेने वालों की और औरों की जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे एक बड़ी भीड़ थी।

30 और फरीसी और उन के शास्त्री उस के चेलों से यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे, कि तुम चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?

31 यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि वैद्य भले चंगों के लिये नहीं, परन्तु बीमारों के लिये अवश्य है।

32 मैं धमिर्यों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूं।

6. लूका 15 : 1, 7 (हर्ष), 11-22, 25 (से :), 28-32

1 सब चुंगी लेने वाले और पापी उसके पास आया करते थे ताकि उस की सुनें।

7 ... एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं॥

11 फिर उस ने कहा, किसी मनुष्य के दो पुत्र थे।

12 उन में से छुटके ने पिता से कहा कि हे पिता संपत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए। उस ने उन को अपनी संपत्ति बांट दी।

13 और बहुत दिन न बीते थे कि छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहां कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी।

14 जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया।

15 और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा : उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये भेजा।

16 और वह चाहता था, कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था।

17 जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, कि मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं।

18 मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा कि पिता जी मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है।

19 अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की नाईं रख ले।

20 तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला: वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।

21 पुत्र ने उस से कहा; पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊं।

22 परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा; फट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में जूतियां पहिनाओ।

25 उसका जेठा पुत्र खेत में था।

28 यह सुनकर वह क्रोध से भर गया, और भीतर जाना न चाहा: परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा।

29 उस ने पिता को उत्तर दिया, कि देख; मैं इतने वर्ष से तरी सेवा कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता।

30 परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिस ने तेरी संपत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिये तू ने पला हुआ बछड़ा कटवाया।

31 उस ने उस से कहा; पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है।

32 परन्तु अब आनन्द करना और मगन होना चाहिए क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है॥

7. भजन संहिता 119: 176 (से *1st* ;)

176 मैं खोई हुई भेड़ की नाईं भटका हूं॥

8. भजन संहिता 25 : 5 (से ;), 6-8

5 मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे, क्योंकि तू मेरा उद्धार करने वाला परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूं।

6 हे यहोवा अपनी दया और करूणा के कामों को स्मरण कर; क्योंकि वे तो अनन्तकाल से होते आए हैं।
7 हे यहोवा अपनी भलाई के कारण मेरी जवानी के पापों और मेरे अपराधों को स्मरण न कर; अपनी करूणा ही के अनुसार तू मुझे स्मरण कर॥
8 यहोवा भला और सीधा है; इसलिये वह पापियों को अपना मार्ग दिखलाएगा।

9. यशायाह 55 : 7-9

7 दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।
8 क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है।
9 क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है॥

10. यशायाह 44 : 21 (मैं) (से ;), 22

21 मैं ने तुझे रचा है।
22 मैं ने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है; मेरी ओर फिर लौट आ, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 35:30

प्रेम का डिजाइन पापी को सुधारना है।

2. 6 : 3-5, 11-22

ईश्वरीय प्रेम मनुष्य को सुधारता है और नियंत्रित करता है। पुरुष क्षमा मांग सकते हैं, लेकिन यह ईश्वरीय सिद्धांत केवल पापी को सुधारता है।

पाप के परिणाम के रूप में पीड़ित होने के लिए, पाप को नष्ट करने का साधन है। जब तक भौतिक जीवन में पाप और पाप नष्ट नहीं हो जाते, तब तक पाप का हर आनंद उसके दर्द के बराबर होगा। स्वर्ग तक पहुँचने के लिए, हम होने के दिव्य सिद्धांत को समझना चाहिए।

"भगवान प्यार है।" इससे अधिक हम पूछ नहीं सकते, उच्च हम नहीं देख सकते हैं, आगे हम नहीं जा सकते। यह मानने के लिए कि ईश्वर क्षमा करता है या पाप को दंडित करता है जैसा कि उसकी दया की मांग की गई है या बिना शर्त के, प्यार को गलत समझना और प्रार्थना को अपराध के लिए सुरक्षा-वाल्व बनाना है।

3. 362 : 1-7, 11 (यह)-12

यह लुका के सुसमाचार के सातवें अध्याय से संबंधित है कि यीशु एक बार एक फरीसी के सम्मानित अतिथि थे, जिसका नाम साइमन था, हालांकि वह साइमन शिष्य के बिल्कुल विपरीत था। जब वे भोजन पर थे, तो एक असामान्य घटना हुई, जैसे कि पूर्वी उत्सव का दृश्य बाधित होता है। एक "अनजान महिला" अंदर आई। ... इस महिला (मैरी मैग्डलीन, जैसा कि उसे तब से कहा जाता है) ने यीशु से संपर्क किया।

4. 363 : 8-15, 21 (और)-31

क्या यीशु ने औरत को अपमान के साथ देखा था? क्या उसने अपने आराध्य को ठुकरा दिया? नहीं! उसने उसे करुणापूर्ण माना। और न ही यह सब था। यह जानकर कि उनके आस-पास के लोग उनके दिल में क्या कहते थे, खासकर उनके मेजबान, — वे सोच रहे थे कि नबी होने के नाते, अति विशिष्ट अतिथि ने एक बार महिला की अनैतिक स्थिति का पता नहीं लगाया और उसे विदा नहीं किया, — यह जानकर, यीशु ने उन्हें एक छोटी कहानी या दृष्टांत के साथ फटकार लगाई। ...और इसलिए सभी को सबक सिखाया, जिसके बाद महिला के लिए यह उल्लेखनीय घोषणा के साथ, "तेरे पाप क्षमा हुए।"

इस प्रकार उसने अपने कर्ज़ को दिव्य प्रेम के लिए क्यों माफ़ किया? यदि उसने पश्चाताप किया और सुधार किया, और क्या उसकी अंतर्दृष्टि ने इस अनिर्दिष्ट नैतिक विद्रोह का पता लगाया? तेल से अभिषेक करने से पहले उसने अपने आंसुओं से अपने पैरों को नहाया। अन्य प्रमाणों की अनुपस्थिति में, उसके दुःख को उसके पश्चाताप, सुधार और ज्ञान में वृद्धि की अपेक्षा को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त सबूत थे?

5. 364 : 8-12

इस तरह के अप्रभावी स्नेह, फरीसी के आतिथ्य या मैगडेलन के प्रति समर्पण की उच्च श्रद्धांजलि कौन थी? इस सवाल का जवाब यीशु ने आत्म-धार्मिकता को ठुकराने और दंड की अनुपस्थिति की घोषणा करके दिया।

6. 473 : 4 (सत्य)-7

सत्य, ईश्वर, त्रुटि का जनक नहीं है। पाप, बीमारी और मृत्यु को त्रुटि के प्रभावों के रूप में वर्गीकृत किया जाना है। मसीह पाप के विश्वास को नष्ट करने के लिए आया था।

7. 497 : 9 (हम)-12

हम पाप को नष्ट करने में ईश्वर की क्षमा और आध्यात्मिक समझ को स्वीकार करते हैं जो बुराई को असत्य करार देती है। लेकिन पाप में विश्वास को तब तक दंडित किया जाता है जब तक कि विश्वास बना रहता है।

8. 327: 1-7, 9-13 (से *2nd*.)

सुधार यह समझने से होता है कि बुराई में कोई खुशी नहीं है, और विज्ञान के अनुसार अच्छे के लिए स्नेह प्राप्त करने से भी, जो अमर तथ्य को उजागर करता है कि न तो खुशी और न ही दर्द, भूख और न ही जुनून, या बात में मौजूद हो सकता है, जबकि दिव्य मन आनंद और पीड़ा, या भय और मानव मन के सभी पापी भूखों की झूठी मान्यताओं को नष्ट कर सकता है।

बुराई कभी-कभी किसी व्यक्ति के अधिकार की सबसे बड़ी अवधारणा होती है, जब तक कि अच्छाई पर उसकी पकड़ मजबूत नहीं हो जाती। तब वह दुष्टता में आनंद खो देता है, और यह उसकी पीड़ा बन जाती है। पाप के दुख से बचने का तरीका है, पाप को रोकना। और कोई रास्ता नहीं है।

9. 404 : 19-25

यह विश्वास, कि पाप में कोई वास्तविक आनंद नहीं है, ईसाई विज्ञान के धर्मशास्त्र में सबसे महत्वपूर्ण बिंदुओं में से एक है। पापी के इस नए और सच्चे दृष्टिकोण के बारे में जानने के लिए, उसे दिखाओ कि पाप कोई खुशी नहीं देता है, और यह ज्ञान उसके नैतिक साहस को मजबूत करता है और बुराई करने और अच्छे से प्यार करने की उसकी क्षमता को बढ़ाता है।

10. 405 : 1 *केवल*

मूल त्रुटि नश्वर मन है।

11. 419 : 1-7

एक नैतिक सवाल बीमारों की वसूली में बाधा बन सकता है। गुप्त त्रुटि, वासना, ईर्ष्या, बदला, द्वेष, या घृणा हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी या यहाँ तक कि बीमारी में विश्वास पैदा करेगी। इस दिशा में सभी प्रकार की त्रुटियां होती हैं। आपका सच्चा पाठ्यक्रम दुश्मन को नष्ट करना है, और ईश्वर, जीवन, सत्य और प्रेम के क्षेत्र को छोड़ देना है, यह याद रखना कि भगवान और उनके विचार अकेले वास्तविक और सामंजस्यपूर्ण हैं।

12. 322 : 14-29

मनुष्य के ज्ञान से पाप में संतुष्टि नहीं मिलती, क्योंकि परमेश्वर ने पाप को भुगतने के लिए सजा सुनाई है। कल की नेक्रोमेंसी ने दिन के प्रति आकर्षण और सम्मोहन को दूर कर दिया। शराबी सोचता है कि वह नशे का आनंद लेता है, और जब तक उसकी खुशी का भौतिक अर्थ उच्चतर अर्थ तक नहीं हो जाता, तब तक आप उसे अधीरता नहीं छोड़ सकते। फिर वह अपने कपों से मुड़ता है, चौंका देने वाले सपने देखने वाले के रूप में, जो विकृत अर्थ के दर्द के माध्यम से एक इनक्यूबस से जागता है। एक आदमी जो गलत करना पसंद करता है - उसमें खुशी ढूंढना और केवल परिणामों के डर से उससे बचना - वह न तो संयमी आदमी है और न ही विश्वसनीय धर्मनिरपेक्ष।

पदार्थ के सपोसिटिटिव जीवन में विश्वास के तेज अनुभव, साथ ही साथ हमारी निराशा और निरंतर व्यर्थ, हमें थका हुआ बच्चों की तरह दिव्य प्रेम की ओर मोड़ते हैं।

13. 205 : 32-3

जब हम दिव्य के साथ अपने संबंध को पूरी तरह से समझते हैं, तो हमारे पास कोई अन्य मन नहीं हो सकता है, लेकिन उनका - कोई अन्य प्रेम, ज्ञान, या सत्य, जीवन का कोई अन्य अर्थ नहीं है, और पदार्थ या त्रुटि के अस्तित्व की कोई चेतना नहीं है।

14. 339 : 1 (यह)-4

पाप का नाश ही क्षमा का दिव्य तरीका है। ईश्वरीय जीवन मृत्यु को नष्ट करता है, सत्य त्रुटि को नष्ट करता है, और प्रेम घृणा को नष्ट करता है। नष्ट होने के नाते, पाप को क्षमा का कोई अन्य रूप नहीं चाहिए।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या

निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6